कार्ल मार्क्स: अलगाव तथा अन्य अवधारणाएँ

(Karl Marx: Alienation & Other Concepts)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

अलगाव

- *Das Capital*, 1867
- इसका शाब्दिक अर्थ ‘अलग होना’ (seperation from) होता है।
- मार्क्स के अनुसार अलगाव एक ऐसी सामाजिक–मनोवैज्ञानिक दशा है, जहां व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के मूलभूत पक्षों से यहाँ तक कि स्वयं से भी कटा हुआ महसूस करता है।
- अलगाव को व्यक्ति की शक्तिहीनता, पृथकता तथा अर्थविहीनता के अनुभव की स्थिति है।
- मार्क्स का मत है कि अलगाव का जन्म उत्पादन प्रणाली द्वारा होता है तथा यह समाज को अलगावित करता है।

अलगाव के कारण

- कार्य के प्रति पागलपन
- रचनात्मकता का अभाव

'बुर्जुआ समाजों में, पूंजी स्वतंत्र तथा वैयक्तिक होती है, जबकि जीवित व्यक्ति आश्रित/ निर्भर होता है तथा उसकी कोई वैयक्तिकता नहीं होती है।' – *Economic & Political Manuscripts*, 1844

अलगाव का अर्थ स्व–विमुखता की स्थिति से है, जिसके परिणामस्वरूप श्रमिक अपने कार्य से अलग–थलग हो जाता है।

जीव तथा सामाजिक जीव

मानव प्रकृति के दो पक्ष

- **जीव (Being)**

  यह उत्पादन प्रणाली द्वारा निर्धारित होता है तथा उसी के साथ परिवर्तित होता रहता है।

  मार्क्स इसे सामाजिक चेतना भी कहते हैं।

  मार्क्स का मानना है कि उत्पादन प्रणाली ने व्यक्ति को स्वार्थी (Selfish) बना दिया है।

- **सामाजिक जीव (Social Being)**

  यह पक्ष स्थिरता को प्रदर्शित करता है।

  मानव स्वभाव से रचनात्मक होता है।

'चेतना द्वारा मानव के अस्तित्व का निर्धारण नहीं होता है, अपितु सामाजिक अस्तित्व द्वारा चेतना का निर्धारण होता है।'

मार्क्स का मत है कि साम्यवाद में सामाजिक जीव का कोई अस्तित्व नहीं होगा।

अलगाव तथा ऐतिहासिक भौतिकवाद

'मानवता के इतिहास के दोहरे पक्ष होते हैं। एक तरफ इतिहास मानव की प्रकृति पर नियंत्रण को दर्शाता है, वहीं दूसरी तरफ यह मानव के अलगाव के बढ़ने का इतिहास है।'

- किसी विशेष उत्पादन प्रणाली में अलगाव की वृद्धि
- उत्पादन प्रणाली के मध्य अलगाव की वृद्धि

अलगाव के प्रकार

चार चरण

- **उत्पादन प्रक्रिया से**

  मशीन से, ऊर्जा के निर्जीव श्रोत से, उत्पादन के पूर्व निर्धारण से, श्रमिक में नियंत्रण के अभाव से

- **उत्पादन से**

  मात्रा व गुण के रूप में श्रमिक में नियंत्रण के अभाव से, उत्पादित वस्तुओं की खरीद–फरोख्त से

- **सहकर्मियों से**

  प्रतिस्पर्धा से, अंतःक्रिया के अभाव से

- **स्वयं से**

  स्वयं के अस्तित्व पर संदेह, परिवार से अंतःक्रिया के लिए समय का अभाव, कम मजदूरी के कारण जीवन निर्वाह दूभर

अलगाव से मुक्ति (De–Alienation)

- पूंजीवादी युग में अलगाव अपने चरम पर पहुँच जाएगा।
- मार्क्स का मत है कि मात्र निजी संपत्ति के समाप्त हो जाने से यह समस्या समाप्त नहीं हो सकती।
- समाजवाद एक संक्रमण का दौर होगा तथा साम्यवाद के काल में अलगाव समाप्त हो जाएगा।
- अलगाव की समाप्ति के बाद 'संपूर्ण मानव' (Total Man) का उदय होगा। (यूटोपिया/ उपकल्पना)

अन्य अवधारणाएँ

- **उत्पादन की एशियाई प्रणाली**

दास तथा सामंतवादी समाज के मध्य की उत्पादन प्रणाली

इस प्रकार के समाज की वास्तविक अथवा काल्पनिक एकता की अभिव्यक्ति राज्य होती है। राज्य आवश्यक आर्थिक संसाधनों के प्रयोग को नियंत्रित करता है तथा समुदाय के उत्पादन व श्रम के कुछ हिस्सों का प्रत्यक्ष उपभोग करता है।

- **समाजवाद**

पूंजीवादी युग के पश्चात जब क्रांति के माध्यम से साम्यवादी शासन की स्थापना होगी, उससे पूर्व संक्रमण की अवस्था के रूप में समाजवाद आएगा। इसमें सरकार/ राज्य व्यवस्था अस्तित्व में रहेगी तथा सर्वहारा शासन करेगा।

- **साम्यवाद**

यह समाज का एक वर्ग विहीन–राज्य विहीन समाज होगा, जिसमें निजी संपत्ति अस्तित्व में नहीं रहेगी। उत्पादन पर सामूहिक अधिकार होगा तथा व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार काम मिलेगा और आवश्यकतानुसार पूर्ति होगी। इस प्रकार न तो वर्ग होगा तथा न ही संघर्ष।

अन्य अवधारणाएँ

- **नागरिक समाज**

मार्क्स ने नागरिक समाज की व्याख्या एक ऐसे भ्रष्ट पूंजीवादी समाज के रूप में किया है, जो चरम व्यक्तिवादिता तथा भौतिकवादी प्रतिस्पर्धा पर आधारित होता है।

- **सामाजिक परिवर्तन**
- **आर्थिक निर्धारणवाद**
- **पण्यीकरण/ वस्तुकरण**

वस्तु के रूप में श्रम की व्याख्या

अन्य अवधारणाएँ

- **प्रैक्सिस (Praxis)**

मार्क्स ने उन स्वतंत्र, सार्वभौमिक, रचनात्मक, स्व–उन्मुखी विचारों को प्रैक्सिस के रूप में बताया है, जिनसे मानव स्वयं तथा ऐतिहासिक दुनिया दोनों को निर्मित व परिवर्तित करता है।

- **अतिरेक जनसंख्या का सिद्धांत**

जनसंख्या वृद्धि से समाज में बेरोजगारी, निर्धनता व आर्थिक संकट उत्पन्न होगा, जिससे कि समाज में शोषण बढ़ेगा। साम्यवादी समाज में इस समस्या से निजात मिलेगा तथा श्रमिकों की दशा में सुधार होगा।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

- मैक्स वेबर: धर्म का सिद्धांत
- डेहरेनडॉर्फ: सत्ता/ प्राधिकार संबंधी विचार
- डेनियल बेल: शिक्षा का महत्व
- गुन्नार मिर्डल: राज्य संबंधी सिद्धांत
- फ्रांसिस फुकोयामा: पूंजीवादी समाज के प्रति आशान्वित
- रूसी क्रांति तथा साम्यवाद की स्थापना
- फ्रेडरिक जेमेसन: विलंबित पूंजीवाद (Late Capitalism), संस्कृति तथा अर्थव्यवस्था आपस में संबंधित

Next Class:

विलफ्रेडो परेटो: तार्किक व अतार्किक क्रिया

(Vilfredo Pareto: Logical and Non–Logical Action)